

DPN 6103

Title : स्थापन मूल मन्त्र STHĀPANA MŪLA MANTRA

Run. No. 6794

Cat. No. 96

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 28.5 x 10.5

Folios 18

Lines (in a page) 11

(8-25)

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

पशुपतिमान पःमाय

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Paśupati mān Paḥmāy

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

अथ स्थापन मूल मन्त्रं व्याहारेष्यामि शेषरां ॥ मेधयारन्तरे सृज्या योगिनी कुर्व संशकाः ॥

नी३

सर्वकामानपूत्रयद्विषैः सर्वसिद्धिददद्वयं ॥ सागनाउ फिसंगावो हायि पाको गतः यनी पूर्वदिगे गोपिम गा (गधदवी
 वउरुनी ॥ अथ सायन मलमर्तु वा रुत्रिष्यामि (गधर्ण ॥ मेधया वक्तुं लङ्काया गिनी कूर्च संरुकाः वधूना वोलाकि
 नीवनुह निर्मना (थावमा ॥ उल्का विना सर्वेण्ये उवंचा दग वीर्यथा ॥ अणुलखनू सर्वथा दवत्या सुदने ननं ॥ सुलि
 गत्ये तदवे निगां गाने व समरु ॥ ७ ॥ नग स्नाता धिय गिह्य रूं मं वलि मूदा नय ॥ निवंदयामि सुकीर्त्य सोम्या अनू
 रुवतु व। धन पूरे श्वर्य मूक्का द्विः पय कु न कीर्त्य ॥ ८ ॥ गधे वउरुनी से वरु या गा यिसु न सुत्रि ॥ ९ ॥ एष विध उ
 दिष्टे वा वलिः सिद्धि विधा य कठि उने मूक्के वलि दया दक्षयः साधका कमः ॥ अतः यनं महा (गेण वि (गधे कम पि
 कुर्व ॥ विन्दू जा समाये वनित्य दद्या दलि सुदा ॥ ने मिहिक दय गिव लि दा ना दन रुनं । ना ना विधे म हा मने वि
 न्दू जा समाये ॥ १० ॥ या नि (गधे विरुं या तित्य ने मिहिका र्व याः । तस्मिन्नि (गधे सर्वे वां यु गि मूख धवा विध
 वउरुको वजागा ना मे कम ल्य न रि नगा ॥ अथ गत मरु गग नीति वे कारि ना छु गि । एव दा मि गू लू धे कम ना दव
 गि सा दवा ॥ ११ ॥ गाने लङ्का या गिनी वनया ना री वध किनी । वउ गान ववी जानि सर्वे यथ मं वद ॥ १२ ॥ गत नाम रि नू
 का वे नू या सि गय द स्य व । विग्रहः संधि गत रु रूं रि नय थ विग्रहा कु न मरु की य द स्य व स न ग्य वि ॥ पूर्व दि ग दि

दधिकं वत्तानां व कोलिकाः ॥ थाका व न ल य जाया ॥ यानामाली स न स्य हि ॥ यं वा न तं स्या कानां हि नानां ग क श्र पा
 वं मि ॥ श्री कथा दि व द स्या चित्ता म न ह्येन की र्त्तनः ॥ कूर्त्तन्ति पूजां ग क र्त्तुं ग म यि या ह न मि तं ॥ अ व न स न्द वी था
 मा य व मि व द नान सा ॥ मा हि नो चि न म थ नी का मि नी व न व र्त्तु नी ॥ म नी ह रा रा वि नी व स न्द्र यो न ग लाल सा ॥
 ल ल ता पा ष्ठा का का न म नी ना ग व द्ध ती वि ता स्त नी रं ग रू मि न वि ना मा द दा यि ती ॥ व नाना रु म दा धा ना व धू र
 व्या र सो क्ता ॥ चं च ला ड्री डि ता वा ला गौ रां ची च प्रियं व द ॥ हे ला व ती भा व व ती प्रौ ढा पि भ्र म व त्य पि ॥ आ क्ला दि नी सु ख करी सु
 वे ज्ञा वे ज्ञा व त्य पि ॥ सु स्वर मो ह न करी वि चित्रा पी व र स्त नी ॥ ह्यो मि णी डा वि णी चा पि ह सं ती व म्हा ष्या पि ॥ प्री ति दा त्री म
 हा मा या प चा त्र सं ख्य का इ मा ॥ अ धि कं कु र्वं ते किं वि ष्णो उ के रा च नु र्थ्य पि ॥ प्रा सा ध नो व र्च यं ती मं त्रै च्च रा ण प र्व कं ॥ उ
 द र्त्तनां त क क व क र्त्तुं तं त कं ग थ ॥ सि न्द्र व य न स र वा व क टा क्षा ध न ना ग यू क ॥ रं ग या धि क मि त्त्तु कि मो ल याः किं
 वि द व हि ॥ अं ग प र्य ग व द्यो स वि र्गं सं पू र्ज यं ति हि ॥ व द्या मी म न ह मि त नो ले षा टी इ कू ल यू क ॥ च ङा ग कं ग थ रा
 वा म लु मा क ल या धू ना ॥ चै त न्यो मा या क म ला या ग म्नी कूर्त्त म त्त थ ॥ ग कि नी च नि य र्व षां जी वा नि क म नः पू न ४

म (थ) क ना नि ग न्य व (ग) थ न म लु रं ष्य न ॥ या श्वा त्या ती उ र्वे का ली या सा दा ग कि नी ग थ ॥ या नि नी नृ रु निः सा
 नृ र्त्त व रु द नृ र्त्त व ना ॥ अ स्या थ न्य त्त्वं म यि पू र्व मि द (ग) व त्रि यू जार्थ मू ले म न्द्र मु पू र्व व य मि या दि क ॥ अ या थः
 ग कि ग यि नी सा च वा ड्ढ नि द र्त्त ना ॥ नि र्थ व ग कि पू जा या स थ न मि ल क पि थ ॥ रं ग चि (ग) थ ४ क थि त ४ चो व्वा प
 र्थ हि दा पि न ॥ ग न व ना स्र व नि र्थ यू जा या म वि कू म न ॥ आव र्थ क र्त्त या रू था ने मि र्त्ति क स म र्त्त ॥ स र्व नि र्थ
 स्र व यं क म न त्र मि र्त्ति क स्र व ॥ उ हा स्या म व नि र्त्त ग कि पू जा य जा य न ॥ रं ग म थ्या क ला रू ला ग कि पू र्ण स
 मा थ्य हि ॥ या गार्त्त न र्थ र्त्त क थ्या न पृ थ क पृ थ क दा य वि ॥ क म ले व प व द्या मि प र्त्त नां या ग म थ्य ॥ अ ग म्थ मू र्त्त
 धी नां स्र व धं स्र व धि यां स्र थ ॥ या गार्त्त व रु द य ना नां म न्या न्य स्र य थ मि दा ॥ त र्थ र्त्त य रू र्त्त नां चू च व हि म हा रि दा नृ
 थ का पो लि क म र्त्त व रु द ग र्त्त र्त्त र्त्त ॥ वि (ग) थ न प व द्या मि त न कू डा न मी श्व त्रि ॥ मी न स्र य प र्त्त त स्या पि कू ल द नि यो
 ठि त ॥ उ प र्थ (ध) हा व न या इ कु क्षा ना मि क थ्या न न ॥ अ वि रू ता धा ग ति क र्त्त र्त्त (ग) र ल ग ल न थ ॥ तं न त नि र्थ व द र्थ
 यो ना पू र्त्त वा न्य र्त्त र्त्त र्त्त ॥ या ग ती र्थ स्र व न नि न व रु मी क दा य न ॥ क स्या हा ज ना द न्य हा ज न त र्थ र्त्त र्त्त र्त्त ॥

20

15

10

5

पुनरुदमर्तपी (० दद्याद्वै विधिः ८ कर्म ॥ दद्यात्तु दयं हि न सर्वं यदा हि न ॥ यावत्तद्यदि संख्या निपातैः
 पुनरुदमर्त ॥ मनुद्वि सफतिमितासुतः ८ कर्म समाप्य ॥ विष्णु नमतद्विदितं मनु न कत्रया धना ॥ मता प्रत दमगाख्या तसु
 त्वं संहितं तसु ॥ न द (ग्रमा हि धानं युक्तं त्वपदनादि ॥ न क रूपा मि ना र्धधियो न स्ता मनु त्री दे ॥ वन मीयं मनु म
 यिसमा कलयया वति ॥ पुनरुदना मयुग तत्व गदे विगु दितं ॥ नात्रा दिमैयुप सु त्रल मपि स्वाहा न्य (ग्रम मनु ॥ कः
 रुद्विग्रह युक्त सर्व मुरु यगापि वृद्धा ॥ न्य वे म कपाग स्य कर्ण न समुदा त्रितं ॥ द्वितीया दिष्ट विरू य द नान्नि विः
 यहा विने ॥ तस्मा रु त्वमिति या अ मरु त्वं यि मना मति ॥ पूर्व वत्स कर्त्त कया द्विती यपि मनो नै मी तथा ॥ द्वि यदा रु त्व
 गद्य स्य तन य स्य च विग्रह ॥ एवं ता ली य क द्यु र्थ पंचमा दिष्ट यो त्रय ॥ यावत्तद्यदि गुरु नु मी न्य पत्त पं मा प्य ॥
 ॥ ताम मनु ८ पु व द्ध क ड रु नो रु त्र न ८ पि य ८ ए व म वा द्विती यपि मनु डे रु ८ य क र्त्त ॥ ड द्वा त्र क म नो द रु त्व ल्य
 म व पु द्ध र्थ ॥ क्रिया च रु द्ध सी रू या मनु द्ध र्थ मपि कु र्वं ॥ विष्णु त्रा दि कु र्वं वा ध्य मिति क र्त्त य ता रु र्थ ॥ पू र्वा
 मनु ८ प त्रि रू य ८ पा र्त्त न र्थ ली रु रु क ॥ पी ० म् रु द्वा म् रु प न रु द्विती य ८ समुदा रु त्र ॥ न वी उ ग र वा रु त्व न य म

नुगर्त तथा ॥ यत्रिपाटी गतं रूयं मी द्दं द न र्थ ली ॥ या त्र गुरु गी रु सु र्वा न क थो दिष्ट ते ॥ अथ विं ग द म ग ल्प दि ग म् व म
 तस्मिन् ॥ तर्प ली संप व द्वा मि स र्वा ग म सु (ग्रं पितं ॥ हि न त्री ह्या य त्रि गतं द्द रु द्वा द्वा त्र म थ व त ॥ मनु ८ स र्व पि द वः
 निव क नू प न या मि ता ८ ए क के सि म् ली द वी हि न न ताम द्यं सि तं ॥ एत ग ता हि न गा रु नो य त्र पा रु ना न्य पा कः
 या र न ॥ ड द्वा त्र म धे ना व क्रि ग व ध ना नि ग म य ॥ व द्वा दि ल रु ना व र्थ ८ सि ग र्थ ८ प थ म म ना ८ ग ल्प त्मा य प द्वा स
 मि त र्थ वा मू य गु द्दि ता प यो रु क त्पा प न्ना लि य मा च रु य त्र पि ॥ न द्वा दि म पि रु ग म दि व र्थ न क्ति त्व रु दि तं ॥
 पु थो रु त्व ना दि धा ना ल उ रु त्र प द्वा सि र्ग ॥ स र्वा दि रु न व र्थ न संध र्थ ल्य दं त र ॥ पु न ॥ स विग्रह रु रु र्थ
 ग ल्प ना म नै ८ पु न ८ पा र्त्त वि ग्ट रु रु द्वा रु क रु र्ग ली र्ग म र्ग रु ८ वा ध्या स र्वा व सानो ग या त रु नी सू त्र वे दि
 त ॥ वि रु या म ग न रु ध न स र्व सि न पि र्व मनु ८ न न्यु ना ना धि क न्ना पि व र्थ ८ स्य ८ र्थ य विं ग ति ८ नो म धाः
 म्ना न्य मं ग ल्प र्थ र्थ म वा दि ता नि त ॥ त्र ह्या दि म य द्वा नी रु स प र्त्त क लं या कि य ॥ सम यो नि ग म न्ना पि पु माः
 यो मं ग लं तथा ॥ आ न न्वा वि रु य न्ना थ न्ना ल रु त्र वा पि च ८ म् रु र्ग वि रु वा ह्या नू प मा ल प र्थ या व पि

20

15

10

5

५३

५१

त्याहेलाकाकषात्ममनू॥महाविपुत्रसूचय्याध्यानाध्यानाधिधियत॥कुक्रिकासकुम(धुडूयासंयकुक्रिका॥मूलद
 देशाफर्प(लुदगवकुगतामनू॥(गेषखखेखेनामकुविधय॥पूरिकर्मलि॥मधुनाहालिकराजंनर्पदीक
 ध्यामिने॥निस्थय्यानिपाणानिषडुकानिमयातवा॥तावेन्यवगुलीहंनरुर्वत्यष्टादगपिय॥निस्थसंहात्रमाण
 लीतर्पलीकुर्वंनवधा॥नेमिरिकमृष्टित्रीत्यातर्पलीपात्रेचकत॥एकेकेस्यगिरुदनकरुर्वंनर्पलीसदा॥नदुद्धार
 यवक्रामिवाजवल्समन्विनं॥सात्रस्वतस्मत्रवधु॥पधर्मसमहाहृतता॥नगाऊसम॥यदपूत्र॥स॥धीपाणामृलः॥
 दृढावकेनविमृष्टता॥नरुडुलीसिगातल्लुंघिनापविष्टरिता॥गुडकातीतर्पयामिवल्ननखाविमानवदत॥
 नगधसाष्टीरुया॥मर्मसायेसमृद्धत॥यमेवेदिनीदुस्वारुपाकसुर्पकसमनू॥एतमकुवसानुपुनत्रन्यम
 नूस्मत्रग॥पदीवादमर्मपायवल्नवीजतीवरी॥खदस्वनित्रल्त्यकनवाल्न्यटितामनू॥पुत्यकंनमनात्र
 नमकुमनंसमृद्धत॥पुत्यकंनमनात्रकमनंसमृद्धत॥पुत्यकंसफवात्रुपुम॥यवेकीरुत॥कत्यादिनी
 य॥यंयंवजिवात्रमधेस्म॥एवंगक्रादियागुपिगुलीहंदेनार्पयत॥मूर्खयडुकसंख्याकासधमखोऊसं

12

५४

मिने॥इत्यात्रपिदवनिवदवाजमिगाधमतर्पलीपूर्ववत्या॥०नालगपत्रिकीरुिनं॥पूर्वादिनेवमुद्यास्यावगुपिनि
 द(गवत्रि॥डुद्धा(धुहावघटितायथापातुस्यानिमित्ति॥नदुदवपकरुर्वंयागुनामपितर्पली॥ल्त्यकधि
 तंदितरुनगनर्पली॥यडुल्ममपिकीलानामकुत्रयाविधि॥कमे॥अथद्वादसयगलीपाका नाष्टि
 वत्तत्रिकर्पलीकथायेष्यामिमनूत्रातिकमोगर्त॥आनूकल्पनविनामधुडूआदिरि॥पुत्रविहितहाऊनयः
 द्यनकार्यश्रुतिपथकिरु॥पूर्वादितायपकात्रावत्यात्र॥कुलमार्गम॥कोलिकानामवतस्यस्माकाना
 वकदायना॥दंमदीयमपत्रमरुयात्रपियुअरु॥द्वोदशमगविचिनाय॥अयकिसूत्रवत्री॥कीलोवा
 यथकोलाकेषामेषकुम॥पिया॥महाद्वाराविमकरुर्वंनाविणयत॥निसामयापितखाकातनावाधम
 वास्पशि॥श्रीदोसामान्यद्वत्र॥कथंनतदनकरुर्वं॥विणयदीपवक्रामिहृदसुर्नरुविध्यति॥यत्रमासाः
 यसमेयहावनावकेसिद्वय॥जीवासाष्टशीअतन॥स्तिरिसंहात्रल्त्यपि॥अनाख्यात्रतगाहासामुकि॥गेषः
 यकीगा॥०निद्वादगपागलीनामानिकथयामित॥यडुवहृष्टिमाग्ननखद्वसंहात्रवर्तना॥अथमकुपुर्क

मिने

५३

5

10

15

20

25

30

20

15

यंत्र १ २

नोक्तवत्तु यामि सुखं ज्ञाति ॥ हि न हि नानि वीजा निर्यं वं कुमा ॥ य ३४ ॥ तत्तु यामि हि धन न पा ज्ञा दस्य विग्रह ॥ तत्तु
 रुतं पकरुयं यत्तु पूर्वस्मिन् यत्र ॥ गता न हि न हि नानि यदा नि सुखं चिने ॥ यत्र पिती पदास्या पि विग्रह स्मिन्
 मा चिने ॥ पुनर्वि हि न नाना मा नि नाना मा संहिता नि ॥ लोकि या यदा नि सु दत न न प्रमी ज्ञा ॥ आ द्य द्यः
 ससं धन वक्ति ॥ यत्र वीजा दन नि य य द्य द्य मदा वि ॥ ने न मा म त ग द्य द्य विग्रह स्मा क ज्ञा वि ॥ त नान्य
 य द्य म क वि य प त सु व कि म ॥ कि या य दानां नि नयं पुन य य म न ज्ञा ॥ एक य प य द द्य द्य म क न द न न य ॥
 पुन य प र्या टा कं हि क र्क यं संधि संहिता पुन ॥ कि या य द यं कं नि य य न द न न य ॥ म क म कं स म य य नाने कं द
 कि संहिता ॥ द न म रु ४ स र्व (ग य य सामा आ द्य ति गी द्य ॥ वि ल य द्य य म धू ना प व दाम्य व धा य ॥ क ल स्त्री या गाः
 नी कु र्व व धू ४ नाना ४ क म न हि ॥ का प का य य क्री नु पा सा द क र य स थ ॥ वी ल य न य या वि द्य द म नानि त न ४ य
 य ॥ रु क्ता नी कि न न रु त्रि प ल य या गि नी न थ ॥ गृ ता क र्क का ला न ग र्क दि फ स न ४ य ॥ हा कि नी यं व क लि कः
 रु न ४ पा सा द य व य ॥ ता य क न य ल उ क र ल स र्ग वि न थ ॥ द्य क ता य म नी मे द ता ट कं सूर सा स न ४ ॥ कृ टि
 या ३

13

10

5

ला प द्य स म य म लि मा ला ४ स र्वा म य ४ ॥ रं जि नी या ग क र्क दि क र्क वि ल य द्य द्य स थ ॥ त न य ना द्य क य टि सा य सा क्ता
 चि नी य या ४ वि द्य कि न म स र्व य य य व क क पान कं ॥ म रु क ल य स र्क यि वी जं स र्व (ग य नि ग द्य ॥ न ति य वि हि वी र्क
 नि क म ल क थि ति ॥ न क क सि म नी यं य यं य द य न न कु मा ॥ पा ज्ञा नाना म क थि तं य य व जि द ल य वि ॥ स र्व
 पि ल ४ पु र्व य द हि न हि न य द वि ॥ त दि दानां पु व क्क मि क मे या ग न य व र्क ॥ य न यं य प यं यं व वि र्क न न द न
 क र्क ॥ नि रं ज न नि र्क ल य य म न न द य व य ॥ स फ म स र्व द हं य य म न य र्क ॥ न व मं च नि या का रं वि य
 या ती न भ व य ॥ न का द य त मं र्क यं क व ल य मि ति व य द ॥ य द द्य द्य स र्क स र्क नि र्क त द न क र्क ॥ त स य व र्क य य
 म धू ना क यामि न ॥ आ द्य म रु य लु या ग य वि सि द्दि का ल य पि ॥ त न सि द्दि वि क र्क ल य पि मा नी म रु य दान ॥ म रु
 मा या व लु का लि नी य न न क र्क ॥ संहिता मा र्ग र्क रु स र्क मा ही म र्क ॥ स र्व य वी य र्क मी या म रु य स र्व य र्क
 य व र्क य र्क (ग र्क य लु स र्व य र्क ॥ व र्क का पा लि नी य र्क स र्व (ग य य न न ॥ कि या य द य म (ग य य र्क
 पु व वी मि न ॥ आ द्य यामि पु थ र्क पु र्व य द न संहिता ॥ अ व क प यामि त न ४ पु र्व व ल य र्क संहिता ॥ प य र्क नि धा य याः
 मि ति न यं यं द यी र्क ॥ य द द्य द्य स र्व क र्क यं यं यं कि या य द ॥ त दि दानां पु व क्क मि द र्क वि ल य नि न म य ॥ ह य र्क य

5 10 15 20 25

430

24

श्रीमद्गौडभाष्याग्निनीजकिनीवाचयलयरुजपालकाः। रुत्कार्यदिकलामालीषाउलोर्वरवन्किहि ॥ गगार
गवतिषोशयककापालिनीवयं॥ संश्रुतमिदमर्नवगृह्ययुग्ममग४यनं॥ गृह्याययद्वयंवाधुर्गुखा
हियुगंयुगं॥ महापुत्रयकालिध्वनूजगङ्गासिनीवयं॥ महादहासिन्यपि वसन्धिहीनं समुच्चयं॥ क
नरुत्कारुनमूलिध्वानवावतग४यनं॥ परुजुनादीनिसपवीजा नितदतकेन॥ निर्जकिनीमहावलि
सर्वसिद्धीध्वनीत्यपि॥ ममलरुत्तमदयद्विनागीयद्विगयं॥ संहनद्वितयंवाचसर्वसिद्धिंददद्वज॥ दहि
द्विदाययद्विधुर्गुवातांतिगयनग४यनमृगयं॥ गुह्यतर्जनीसर्वलवग४यननयमनूपायसुचुमामादिनी
तर्जनी॥ पानीयमृत्तुजद्वितयध्विद्वयपाणन॥ यतन्यकमलाकामयाग्निनीवृषध्वनूष१। नृसिंहामृगसं
रुववीजानियुननातव॥ वलुकापालिनीकामसन्धिहीनमिदंजलं॥ पिदसुदसुदयुग्मंरुर्गुह्यनिर्वालि॥
निमीलैलावनेवधाया समुदांकवंधि। रौजयकालिकोत्तहावनूयलदलिकः॥ नददाचमनीयां
वनीमिसर्वापदगय०॥ पूषादिग४यनमृत्तुलतामूलनिवदय॥ कालीनिवेदिगान्नानिसाधके४सद
दलिकः॥ उंजीतयर्वकशिपयकायलेवयावने। वलिनरौजनकालीयानकालीसंख्यायनादिकाम्॥

37

गूढनादानवादेत्याः पृष्ठस्त्रयास्तु वक्ष्यं। खतनाथं महानोदा मोद कर्मलियाजिताः शुक्रकाधार्वाकाः सर्वद्वयं या तु द्वे गमितः
 यवस्त्रमादसाः कृमाः सूर्यकलुगलाहवाः अरुधागतावितस्थकु मलुयतादगाहगाः एवं वद्वयिकाया सुविद्या नृत्ता
 र्थासाधकः पूनः कृताउलियूया मलानता नृत्तामीवथ ॥ दवाद्यद्युजा किन्याथानिन्या मागवस्तथा ॥ सिद्धाः सध्या ४ द्रवयोः
 लाहवथा सेववास्तथा ॥ चामूला निवद्वयश्च हावयाला विनायकाः आदित्या वसवा नृत्तादिकृयाला म नृत्ता ॥ सर्वानूयानसा
 याधुगन्धर्वादि नृत्तामी ॥ दद्याः पानिषदीहतायाः काष्ठिद्वयथानयः मलुला नृत्ता सिता निस्यं वद्विता न्या य आनिव ॥ सर्वस
 तिदिगाः संतु यवत कृत्ता नृत्ता ॥ वउनाः मूत्तनृत्ता नृत्ता पाला यामस्त्रिधा यव मया ॥ दिके व ग द नृत्ता कृया न्या मग्यं नृत्ता
 माहृकां यो ग वलं ववकं न्या म गथे वय ॥ मयं यो कृत्ता या का यो द्वौ न्या मी ग द नृत्ता ॥ ग दान्याः दोग ना मानो पृष्ठा मीने
 लपूजने ॥ गको यं या पि द वं मि विधया द लि को क मेः अ ग को उ प नि ग्या अ म ग्धं न्या मग्यं पिय ॥ न न्वं ता व दृता गो ने गा
 र्वा म्हा निक मादरी ॥ उ की ला व विधान ता न्नि व ग क्ताः यव म्यं नं ग दान्या क न ग्धा पि ग दान्या न्या म उ यं ॥ काया लिका नृत्ता वि
 ता ता न्ये जा न न्ये नं वि य श्रुतः ज स ना द्वेः समुद्रये मया स्या विनि व लि गः उ द्वा न मयू ना द्ये च अ मालं लि ग मय ॥ अ म्यं गा
 दा ल्ये स्या सं द्रु स्या न्या म स्या व न म ग्धे वि ॥ अ म्यं य मयि नृत्ता द्वाः यं किं नृत्ता उ द्वा नि ग ॥ स दानि व द्वा लिन्यो द व गा व नि की लि त ॥ का
 मवी उं न था वी उं स्त्री वी उं ग कि न व व ॥ ग कि नी वी उ म्दि गं क ल क ल न या र्वा नि नि व ग क्ता न की क न ला वि नि या ग गाः ॥ द द्वा य

20

15

(तां शुक्रं न्यसदं सुखार्थं हृदि॥ कर्तव्यः काकिनी नमिच्छुद विविक्तं गन्तुं॥ तर्जनी युग्मया गार्धन्यसक्तं मत्तावन॥ सुनिदे
 यागिनी यक्षुधूमेलेति गयानिनेः॥ न्यसदं यामिधमयाः लिखाया कदनं गन्तुं॥ विहावधुविनाशुजैः सदेन वरुमाविके॥
 न्यसदनामिकायुग्मकववाय गगः पत्रं॥ नृसिंहोक्तः यंचवीजः कल्ये मकुमदाकुमेः कतिहायुग्मया नोपुययवनिविच्य
 स॥ पुरंजनाह गिनी वयुष्ठाक कनायपि॥ कालराणि नमीहिसुवीजैः यंचरित्रीध्वनि। कामद्विदृष्टदलया नम्रायतनं
 गन्तुं॥ अर्कगक मेकयुते मृथादिविधिवीदगः॥ अगः पत्रं निवाधत्तन्यासाक्षा नंशु विभिग॥ आदोसा मान्य नूयदा विग
 धरागतः पत्रं॥ ह्यतया न्यवलेखनं पंचवीजानि वयुनः रिन्न रिन्नानि नामानि लिखानि गदनं कन्तं॥ हंदा रथा विगहं मां
 तनसिंह यदेऽस्तिने॥ गगः युथक पृथग्युयनामानि पुननवदि। तेषां च विगहं रूयः पूर्ववत् कालिकायदेः पूर्वदि
 गयदे हंदा पदद्वयः पुगु कविगह्युने नासके नूयगुहर्ग॥ गधष द्विगतिवर्तुः सर्वग समनूयिदाः याम्यया ग्य
 स्तले वेगं संधानि गयानि विगाः॥ ०० तिसा मान्य उक्ता विगध मधुना गृह्ण॥ गगनाय समनवधु गकि न्यः पृथसंदिगाः।
 कालामालीक्षारण्यगधमवे वापना डिगि स्थिति धृगुर्थ कल्याका नम्रावे वयनायनः विगध मधुने रुदा व स दस उज्जवत्।
 विगु जिह्वा धान उक्ता महाकासा निन ववा मद्यना दधु विकट रुतः विग सदापिच॥ पदीक विगध नूयगु विंदुदग्न

३२

७१

10

5

३२

एकद॥ लक्षा विंश वलाधुयि रता काशमकारुथा॥ पगधु नमी यमु सर्वग आमयऽपिय॥ यंच विगति सख्या काजगह्या क
 मलादि॥ तनसिंह यदा सुर्वलदाः प्रगिमता रुताः कालिकायदगः पूर्वयदानि गृह्यतः पत्रं। धूमधो नना दगृहाला कल्या
 कनवत्॥ वगलेकं काले संक्षोड्य सुदनं कन्तं॥ संहान नूदा वयिच कंता का दग मऽस्मृतः॥ महा नाधिगु संग्रामलीमी
 लवत्तः पत्रं॥ व(लो) बुधिवधा नोय रयंकन ०० गो यनू॥ डन विगतिमः संग्रामाख्यः कामकलागतः दक्षि(लो) रुद
 ०० लवेऽस्मत्ते सिद्धि नवव॥ सर्वगधय निरुय उक्तक ०० ति वेयदे॥ यंच विगक मं ध्रुवा वलुनि सध्विगति गृह्ण॥ यदान्यधो
 रुवं लवद्विन रुन संवेयः॥ उकी लावं रुवदा र्घ्यं द्वितीयं लावयामिच॥ तौ कीय कमरिनी वरया लाउ र्यमवत्॥ यंच मं सामस्य
 स्या० यचं वे वाप गदुगी नमऽसक मसूदि हं ला हा यो ह ममी विग॥ उगं यध्विगति वलुऽस्यः संधानं न संहिगाः नो मनी
 यस्यापनमतः कथयामि वना तन॥ पुवा लो वनयो सासापूठया ध्रु कपो नथाः कलुया नथ रु वो शु सुके (लो) सुदनं कन्तं॥ गगाः
 नू यो धाध नया र्दक यक्षो रुत (ये) ववा गगः सुयदया र्धु र्जु रु (लो) स्तंभया नयिः कदयोः यार्धया धु नू कथी तं नवृ क
 याः गगः पत्रं य निरुयं कला (लो) मलि वध्वयाः॥ कना गया ध्रु कटयाः पुनर्वदा गया नयि॥ उवा जि विरुयथा ध्रु पश्चादिष्य
 दया नयि॥ ०० दगुका वना यो रु तादा ल्या सको हृतिऽजु ह्ने तन्या समधुना कनया मयवधा नय॥ अस्या ह्ने न विधानत्य न्या समुज
 गदीध्वनि॥ नाना यम मृषिऽपा क कृन्धो गिज गती तथा। समुदि ध्वं ग कि गकि मयो देव ग ०० लयि॥ अका नो का व मका ना वीजा

5

10

15

20

25

3

20

15

नीकधितातिदि॥ गकयधकलानादविद्वद्वयत्रिकारिणाः तमा नजः सत्त्वानिकीलकानि तथेवव । नासं संयति नाहिरुंज
 यत्र विनियोगा ॥ नादयालोक्षकले स्तानेन विनियोगे वचद्वयता गवो वापि पदवाधुक्त संरुको नियाज नियोवि
 इवा स्तानेक नवर्ग गयी ॥ अथाने गस्तु म्मोने पवदामि मरुतुलं । कर्तयने कवा नं जीव म्मकारुव न नः तीजय
 संपथमग ॥ स्तिन नूयगया । स्तेनं । तगा नामातिरिन्नानि सर्वे वक म्मदादि । ते श्वक ग ॥ स्य पुन विग्रहाद कर्तुं निगः
 पुनत्रासातिरिन्नानि ॥ यी ॥ स्यदि च पूर्ववत् । गग ॥ यनं पुन न्नाम रिन्नं रिन्नं म्मन्यवि । ते नूयी दीपद स्या पि विग्रहा
 रु विरुकि ग ॥ रिन्नं रिन्नं पुन न्नामिदया ॥ पूर्व विरुकि कं स्तिनार्थं वा कुरी ॥ य सामा न्या द्वा निनी दगा ॥ विग म्मका नया म्मिध
 सोकिनी वीज म्मक कं । अग यनं च क यद पूर्व लया निगमया वृक्ष नं धं तगः सामे मत्त सी र्गा र्गा या विनित ता च विरुद्धि ॥ स्या
 दनाह गमवव ॥ मालि म्मक मास्या त्वा पि स्तानं गतः यनं । सर्वे गाय विरुद्धा म्मला धा वा वना तन ॥ अथ यी ॥ यदा त्पू र्व य
 दानि पत्रि वलुय । सदा निवाम हा द व ॥ सर्वे र्द्ध म्मह व ॥ म्मलुं जया म्महा नूदः स यन्म व ॥ तः यनी । वा म्मद वा था म्मक ॥ गाय न
 सुद ग मा मगः ॥ अथ गी ॥ नूयि दीप द पूर्व गदा निगमया ॥ वृक्ष नाद कला विदुः सिद्धि र्था गस्तु च व ॥ अत न्दु ग्म म्मका ति म्म
 पुन्य मगः यनं ॥ दगा म्म सर्वे गायी यं निवा ग मिमि क थर्ग ॥ नूयि दीप द गा रु का रु कं दया रिधा ॥ युक् काली य लुया ॥ श्री

३३

१८

10

5

सिद्धि कोत्य पि ॥ सिद्ध ता विक नाली व वृक्ष काया लिती गथा ॥ चिक्क ला कला ती गाम फमी वि नि ग यत वे गन्य नूया गद नूया नि
 म्मथ म्मन्य वि ॥ गग ॥ कु लिते सर्वे गायी या पि द गाय वि ॥ द्द म्म गाय वि कं व र्द्ध या र्थं वा कुरी ल्यय ॥ अथ स्ताने व वी
 म्मया र्द्धा त पूर्व मयि पिथ ॥ वृक्ष नं धं म्महा र्ण व क याले ता क न्म व ॥ घटिका या वि के ॥ व द्द य ता रि म्मलुं ॥ उ य कं
 व त्थ धा व न्म मनी या कु म न दि ॥ अथ गाय म्म द्द को द्वा नं य वि की र्ति ग ॥ द्द क थ य र्द्ध या च म हि मा ना स्या ग म्म ॥
 वलि र्द्ध सक लियेः किं पुन म्म नूये ॥ लियु ॥ न ग म्म म हि मा नं दि लि वा व लि स ना ग न म्म र्द्ध वा व म्मि द वे लि व वा व क्क क
 ल य म्म ॥ न ग म्म स ग ग या सा म्म कि ॥ क न त्थं स्ति ग ॥ यथ पि सां ख्य ॥ ग म्म मि न्म मा स नो य व लि तः ॥ अत वि ग म्म तः
 का थो न्या सा द्द ग रि धः सदा ॥ ग व मे ध ग ता वि ग र्द्ध ग म्म लि स म्म र्द्ध ग ॥ वि ग र्द्ध ग न स मा ग य वा ग धा वं तगः यनं ॥ अत
 य द्दि ग यं पा य कुरी म्म द द या ति व ॥ म्म ल्म न क्क म्म मा द्द ग या र्द्ध य र्द्ध लं । पुन म्म या ग कि नी या पि लो की सं र वा य द
 लि या दि का य द नो पि रु क म्म कं व द्द म्मि नः वा ग धा वं न म न व पु र्द्ध य वि र्द्ध य ॥ वृक्ष मा ने न म्म ल्म क्क वा स क नं म्मि
 तं ॥ आ गि नी क्क र्द्ध ना वं स्या द्द क स्या क्क ल की ल कं । स्वा हा ग ग द्द धा वं र्द्ध म्म सं र्द्ध य य च्च नः । म्म न्म नं य ॥ न क्क र्द्ध ना वा या
 म्म म्म व व ॥ गग ॥ पु र्द्ध य र्द्ध वि र्द्धि का य पि या दि का । का म वी ज द्दो म्मि र्द्ध कं लो क य य ॥ न ॥ स्व र्द्ध ना का म र्द्धि ता
 कः वा ग ला लो क नू व य । म्म ल्म य र्ण ग ता न न म्म न्म ना काल य लिथ ॥ व त्थ य ग ता ले था मालि न्म मि ति की र्ति ग थ ॥

5

10

15

20

25

[illegible]

28

अलिखत्वा मरु मेघ मदी नय ॥ क्षी ना द्वि मथ ना द्वे वा नू नि त्वं सुधा नू ज । आ पू र्ण वा ग मं वा या नि ष्ट पी यू ष नू पि लि
त ग्वा णं य र्ण य श लु य न न न्यं म नू न नृ ण न मा ग ना त द न द्यो ह उ न्दि ला म न्द वि गृ हं ह व क्तुं प्र गि विं व त्व म न्यां १ ध
हि म न्द य वि ॥ ग गा गृ हा क्तुं म नि गु टि ध्या न मा च न ॥ दं द्यो गी न धे ति क म ली ती ह व क्तुं मा धी क धा वा स सा ना द्वि प
ग न वी ग त्रि ज न्म ह द्या द वा मिः मो ह द्या क त्रि इ त्र य व मा न न्द मा ह उ म र्तिः ह्या न्ति त्वं व स क्तु म न सा नि गु टो लु क का
ली पा या दि दी य नो दो गं म ल म लं ल सा ध कः । स र्व द द्या न्म हा का ल्ये नै व शं वा य क ल्ये तं । व द्म मा न न म लं ल पा र्ण त च
स म र्थ ७ ॥ प ल वा मा मे ध त क्तुं गी कि नी या नि ती क्तु यः । क र्व स मे न त वे ग ति वी ज्ञा न्मा दो स म च न ॥ त गः सु धा
पि वं द्वि ई ह द द्य स गं य न ॥ आ ह द य द्यं वा यि नि व र्ण क्तु य द न ॥ सा त न ह्य नि स की र्थ त र्वे प वि ण ग क्तु नी १०
तं स म र्थ द्यो पा र्ण म क म व च व ना त न । आ द य र्व प र्व ग ना नि स र्व व वि स ना ॥ म न सा प र्व ७ क र्व वा द द्य पा र्ण स वा
नू ह । प र्वि ग क्तु द नं वा थ द्या नि ग द ल म व च ॥ ७ ॥ य उ च्चिं ग ति प र्ण य ग ना द वी य यू ज य ॥ त नं स थ स गः पा च न मः
१ ध नि था श्र व ॥ १० कं ग र्वा म द द्या प र्व १० य र्व थ क्तु यः द द द्याः वा नि ष दी ह ताः यू ज य त्प न म न्या गीः क ना वी वि
क ना ली च त ग ॥ का ल्या य नी म्ना र्ण न र्वा ल्का म र्वी च री ष द्य व क या लि नी । म न्मा न वा नि नी का ल ना यि नू द द्य

विष्णुय ॥ चतुर्का कोलिनीया ग्रा काल कर्तु यर्ग निनी ॥ जाल धत्री नाग हा ना तता नू चण वासना ॥ पून मेहा ख
 वरी च महा मया च पा विनिर्ग लम्बा दनी वि गज दा रा मा वजन खी तथा ॥ काला मालिनी (था रु य विष्णु ना ना य ना डि ता
 वना पना वि नूपा च विष्णु जि को नतः य न ॥ धा व दं डु म घ ता दा पु दी फु व कटं कटा ॥ वरुणि गति ग मा रु या विष्णु नूपा रि
 धा नि म ॥ हा रिं द द ल द वी सु सां य रं व द मि ग ॥ का न ध वी हा ग व ती (मो नी ते न य न क र ॥ इ र्ना त गः कालिका च ताम
 धु नि व इ ल यि ॥ मा रु ध वी की नी की व ज य क का द गी गु था ॥ ग ता म हा मं ग ला च मे धा ग क र वी ग था ॥ गी का मि का या
 म नी च मू य धु च म हा द नी धा न रू या च द व ति क मं क र्थ थ क थ ग ॥ म हा नि हा र वा नी व वि ज य ॥ मा द हा सि नी ॥ मू लु मा
 लि न्य थ वि णा वि नी स्या ग य ज ता त था ॥ क मा द नी वा वि ज ग कु सि नी स र्व (ग व नाः ॥ व रु विं ग ति य रु क्ता ४ क थ रं ग क
 यो धू ना ॥ म हा ल क्का र्च न य रु मा गं गी व स न र गी ॥ अ ध्वा नू रा ति ल वि त्रा त गः य म्मा व नी म गा ॥ अ रू मी या थ म रु व म र्द
 नी उ व मे ध वी ॥ व ग ला धू लि नी वा वि अ यो ना ल वि ता त था ॥ वा ग्या दि नी व ध न दा कि ना रं ध र्थ न क र ॥ क कू दी व लु का
 वा वि ध व रं ध र्थ न क र ॥ त गः उ च्चि व रा धु लि न्य (था ना क ल्य वि षि य ॥ ल व न ध वी जा त य द सी त था ग त क ल्य वि ॥ अ थ
 धा उ ग य रु क्ताः क थ रं ग क यो म या ॥ व (धु य नी च लु घ ण सि धि ल क्का ग तः य न ॥ काल सं क र्ष णी वा पि च्छि त म क्ता ग थे व
 ग त उ क ज टा वा ला म हा वि पू न स न नी ॥ पू न नी ल य ना का व रु न सि धा व कू डि का ॥ ना ज ना उं ध वी ध व रु कू ट ध र्थ थि क थ ग ॥

३५

२०

अतंगमालास्यामूढमधुमलयानकनं ॥ रुययीवधनीवायिस्थागुषाजगमायिथ ॥ अथंहादगदलताः कुमलवृवीमिग
 निर्मलाक्रमदावेवकोमूकागदनकनं ॥ सुलादनीवाथकालसुन्दरीयथकथार्थ ॥ लिंगधामिथ्यपितगा रुवंडुमनूकापि
 च।महामावीनकदकालेतिगावमहाकेटी ॥ सतश्चमथिनीसुवृणयंयविनिगघर्ग ॥ देवीवधदनीयासेकथयोम्य
 धूनायिथ ॥ उच्छ्वनीवागुवीचचञ्चिकायूरयागथा ॥ मागंगीचकवीवायिगामसीतदनंतनं ॥ हीमादवीसर्वगष
 वृक्षस्याष्टविरागतः सेववीः पूजयदक्षीनाक्रमेगलिगामय ॥ सर्वव्यासरिधानां ॥ सेववीयदमनिमंदातर्था पूर्ववका
 र्थं तल्यग्राअदूदीनिगो ॥ अमितागानूर (काध उ ग उ म रु ए व वा ॥ च लुः कयालीसंहावर्णितयविकीर्तिताः ॥ अथैव
 स्याष्टकाविनिवाधवनाननं ॥ उगवधुगवधुववा (धु या च लु ना सिका ॥ च लुः च लु व नी च व च लु नू या मि व लु का ॥
 पून वृक्षस्याष्टदिहदवशीसमर्चय ॥ वक्राणी पूर्वदिग्गामादुध्वर्थथकथार्थ ॥ कोमानीवैधुवीवायिवा नाहीः
 नानसिद्धिपि ॥ रुदा (धी नि व दू नी व दू र स्याष्टविरागं गः ॥ न व का ग स्य याः गी की ग सं व क्रि मू न धे नि ॥ रुड काली च ध्म
 गान काली दक्षिणी काल्यपि ॥ च लु काली सिद्धि काली काल काली ग थे व वा ॥ त गः का म क ला काली ध न काली त गः य न ॥ ॥
 उच्छकालीसर्वगषयंवा ना न स्या धू ना ए र्ण ॥ रुद्धि काली सिद्धि काली पूनः संहा न काल्यपि ॥ अनाया काल्यपितगा रा सा का
 ली च (ग व नाः ॥ व वी मि सां य रं शो रं द वा दी व क्क नू पि णी ॥ वि षू रू पि थ्य पि त गा नू ड नू पि थ्य न क नं ॥ अ थ विं दो द ग स्या ना

नाम ४८ पवित्रं यः ॥ अथो महावतु या गण्य विविदि दशयुक्तिः ॥ वरु कायालिनी वायिमहाजमयं न कर्तुं ॥ ततः ४८ सिद्धि
 कनालीव सिद्धि ताविक नात्यपि ॥ युष्मकालीव लुकायालिनी वा दानहासिनी ॥ मृगु मालिन्यपि ततः काले च कुं स्वनीपि
 य ॥ एवमाव नगीया चो विधा तया विप ॥ विगाने मिहिक समूह तानेव निर्यादिनासिका ॥ नागसिंहासधनाः
 पूष्के नूदणासनात् ॥ नवभणाननका दायागयी विधि विना ॥ तगाजयं पकृषात सदसुं गममेव वा यावदुः
 कं वापि द विरथा निर्याधिकं रुवं ॥ पूर्वोक्तं नेव मर्क लजयं द यः समर्थय ॥ पुनरावापिकं दयायागुकुमनू
 नेव हि ॥ मरुनें गानुव न दे आनापि मलकने ॥ जगन्मातृ गहयज गतावकात्रिलि ॥ विकमालतमा कानं विनू
 य विष्णुविगुद ॥ हर्यं कनें लामना दहव वध विभायीनि ॥ युष्मकालिमहाव लु दणा नन विरुषिग ॥ भणान निन
 थनाद संगसितजगकुर्य ॥ यं व काला नला वासवतुः यं वा दाय्यं नन सिंहा समा नूट्यालाले कालरुषिग ॥ पलाता
 हिदुनं निर्यादे दानवनासिनि ॥ संसावयोगि चिद्वन ॥ गलदुधिन वरुचि ॥ युष्मकालिने मरुमु नमरुमु नमानम ॥ ६०
 त्यावापिक नावेद्य सुगालिसुमदीनय ॥ ॥ अथ ग्य कगया पाशं कृदव विष्णुमंगलं गयमाव ग्य कं वापि दवी संगायदु
 गवं ॥ सुधाभावा रिधं सुगं मेक मन्यव वरुचि ॥ तदया ॥ नदव लिगर्थने मिहिको चर्चनं ॥ यिपु नात्रि नरु वापि सुगस्य

३१३

२१

तस्य पा० को ॥ सुखा समर्थया वसां सर्वरुत्व समीहया ॥ धीदयूवाच ॥ को दमंत मरु सुखा सुगं यदि वा पणः सदा ॥ यस्य ता
 मसुधाभावा सुखा सहजं वरु ॥ तदहं श्रुमिह मि सुधाभावा रिधं सुवे ॥ पाशाधिक पियगममहा कालय वीहिम ॥
 श्रीमहाकाल उवाच ॥ अविद्याः मि ना को वरुकि सुवया ॥ १ ॥ अग्रा कतिवा दने कानक कला ॥ २ ॥ कसा धावती ला द सर्वधि
 कला ॥ ३ ॥ यदाने वधा गान विरुन वदा ॥ ४ ॥ तमासां सकानेव का लान गकी ॥ ५ ॥ नगताम गाय नगज नमस्य ॥ ६ ॥ तवा
 लान वरु वयस्य ते वदा ॥ ७ ॥ जलंगा गलत्वं युवो दारु कर्तुं ॥ ८ ॥ ययो कृदे मृग पूना जमह ॥ ९ ॥ कनाला कती न्यावना
 निधियकि ॥ १० ॥ महावतु या गण्य नी युष्मकाली ॥ ११ ॥ नूवनी लिवा रिर्वहनी कया ले येयमी ॥ १२ ॥ लया दायि वाताधिक ॥
 १३ ॥ यथा विष्णु मर्क नवं नवं ॥ १४ ॥ यथा राम शिवा ॥ १५ ॥ यथा वंग वरुचि ॥ १६ ॥ महाका गता कात्र ॥ १७ ॥ कथा गसने
 याग ॥ १८ ॥ विगु द्या पना विनयी सुय का ॥ १९ ॥ महाघाव काला ॥ २० ॥ गथानेव कर्तुं वयः ॥ २१ ॥ निव कर्तुं गी ॥ २२ ॥
 नमन्य दत्रि ता विधाता ॥ २३ ॥ ननासां विनिंदति ॥ २४ ॥ महाका वरु दिति सुगं ॥ २५ ॥ ६० मिह कथि ती द विरुधा धावा कुर्यः
 सुवः ॥ गस्य सगता स्या सिद्धिः कनग वरु मि ग ॥ एग कालं व कव वं गयं पियगमय दः ॥ पथनीयं ययव नने मिहिक
 समहो ॥ गया लामय ता वा स्या दंग हानि ४८ नं यत्रि ॥ अतः ४८ पवं प्र कर्तुं कथं सर्वं निवा धम ॥ सुवानं गान यपि लेवं द

20

15

पदं नतः साधनं वदयं ॥ संहारविधिपदं दत्तासम्पादिनीपदं वद ॥ कुरु कुरु तिसंवाधाकिविदं दं किलिठयं ॥ कुरु यन्मा
 सुयुग्मं वलिनाकोमनू रागितः ॥ जूनासर्गविधायकं सद्नमयस्यव ॥ तामां यन्कनमीदं तालिवाणाया निवानवा ॥
 आनतास्थानमस्तु यदिवो वृद्धावनातन ॥ गिवास्तुतावमनूयोः कालीन्यादिनायत ॥ कुरु नृपं दिष्टत्वावेत्यमाया नि
 कालिका ॥ गिवास्तु रुद्रयुक्ती वृत्तवलिमादुन ॥ संहारनृपवायापिकुणयालं यत्नव ॥ वद केथोठाकिनीया मा रु
 यधेवलिनं रुन ॥ मेरुदेवयं साप्रातिनिः ॥ गेयं रुद्रयुक्ति ॥ अद्भुतकावद्वसिद्धि न शङ्क विषय रुव ॥ अनागम
 उमनं गता यन्नात्यत्रिकेय ॥ पथि हृत्ता वरुदध्यां मवं कर्त्तुं साधकः गिवावलिनयं याकोमहा रुतमहादयः
 विस्तुनं कमल गस्य विधानं कामकालिके ॥ वदुं नु विगणयं मयं नु दग्धनि ॥ अनूकल्यिक मूयं गिवावलिनयम
 गः विस्तुनं रुद्रयुक्ती वृत्तवलिमादुन ॥ मनु नृप ॥ गयाथाकोमथ तामां मुनिय ॥ १० ॥ दधुवत्यं मन्वापि वरुकाया
 लिनीधिया ॥ इनेगागध कस्तुमं वृथै मरु मरुः गिवा नृपधयेदं विगुक्क कालिनमा मुन ॥ उल्का मुखिल लकिं कलाम
 नायं गतालिनि ॥ मन्नातवा सिनीपुत गवसां सुखियं तद्य ॥ अन्वयवा तिलि लि वं रुनां वृक नृपिणी ॥ नमा मुने म
 हा मायं उगता न कालिके ॥ सातनि कृत्तिके नोडी वरु नृपतमा मुने सर्वसिद्धि सदाधारे तय कति रथावहं ॥ पसन्ना एव

२८

२३

१०

५

दवे गिरक स्य मम कालिके ॥ संहारगाविलिजयजयसर्व रयंक वि ॥ विस्तुनं विक्रव वरु वामां मुनू मालिनि ॥ संहारका
 विलिक्कं सर्वसिद्धि ययुमे ॥ इनेकिनात गवरीयता सनगः ॥ रय ॥ अन्वयं कुरु सदा रुयया सा विलोकय ॥ नायं प
 यक्क विकटं विरुमायुः सुगालियं गिवावलिविधानं नपसन्ना एव कालिके ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥
 १० ॥ ह्यने नरु हिः ॥ स्त्रीकेः गिवास्तुतावमनूयोः ॥ तगस्तु इच्छि मन्त्रं ॥ लया लाजनं हि ॥ सर्वानि खनं रुमीयय
 लेनेव यावति ॥ यदिका गः मन्नाज्वा नायवा नृप्य वासिनः ॥ रुद्रयुक्ति गइच्छि मन्त्रं ॥ महादोषा एव रुदा ॥ पूनं नागस्य
 पूनगाधया व वरु जलि ॥ १० ॥ ह्यने गवरीयता सनगः ॥ रुद्रयुक्ति गइच्छि मन्त्रं ॥ महादोषा एव रुदा ॥ पूनं नागस्य
 व ॥ पूया ॥ ३ ॥ लि ॥ यं दया ॥ पठितं मं मनू सुधाः ॥ रुमी नलमिल नो लिक नृपु ॥ १० ॥ मन्ना ॥ यामा दहि नलक ॥
 दिक्ता उविधिमीदं ॥ ननेव मनूना दया पूनं व निवेदय ॥ तनायि सिद्धा एव गिवावलिन नृप मन्ना ॥ पूया कयाधनी
 खेवमन्त्रं नयि वयि ॥ ॥ गीयाय ग्रहं रुद्रयुक्ति गइच्छि मन्त्रं ॥ यानिने मिक्किया नृक ॥ गकु र्वनकु मः ॥ तम
 गव विगणयं रुद्रयुक्ति गइच्छि मन्त्रं ॥ दया ना नृप विधि मन्त्र पाण्डि गकमेः ॥ संहारनृपवायापिकुणयालं यत्नव ॥
 वन ॥ दवी वृद्धा ॥ ह्यने नृपकायाया काश्चन दय ॥ निदानं तग कमे रुतं दय मेव वनातन ॥ गुनूयदं ॥ १० ॥ पथम ॥

5

10

15

20

25

30

यगीत्याहं निम निष्ठितामिति॥ नमो मया प्रणिष्टा बल श्री गणेश सदास्तिनाः प्रसुतं गणेश सार्थं यमार्थं मस्तु कोपवि॥ धन्या
 हं कृतकथा हं सफलं मम जीवितं । यमस्त्वच नमो ममो मना निवसतं सदा॥ शुक्र काली गिरः पातु गतिनी हृदयं मम॥ क
 थं सिद्धि कर्माती वचन्यया । गणेशी हिर्य॥ वलुका पालिनी वाहू पादो ह्यो मूलुमालिनी॥ भूदहा मंथनी वक्र काल चक्रं ग्वनी
 तनूं प्रास्य नं महा काली सर्व मर्मा विवर्तिका वक्र काया तिनी सर्वा अपति य सर्वदा॥ नमस्तु गिज गमा नमस्ति नृक्ष नक्ष
 गतं । कृतं यथा ग कि मया तव ने मित्रिका च न । न्यूता मित्रिके ता ह्य नान ज न्य दा वान कम स्व मे॥ अति ४१ श्लोकेः शक्ति पा ०
 मित्राय यय मंथनीः पायय द्वि गय न ताना सु वलं संवृतं॥ गंखर्चं ध्वनिं कर्त्तुं न धूय दीपो दद सुधा॥ स्थापिता या॥
 विष्णो घा र्च गया गंखा व नान न॥ तस्मिन् गय ना हि षिं यत्सर्वं कीर्त्तुं को लिकान पि॥ तिर्यो गय हृदि ४ यश्च विना सिय सु दिर्घा
 न गानि वि क्रिया शा को व द न्य समा य नं॥ रणी दं कथि गंद वि ने मित्रिक सम हं । निर्यादिना हि न नृयं वा ह्यत्यं यत्रि
 वृं हि गं॥ यलु पाद विष्णो यं यज विष्णु पत्रि कृतं॥ निर्या मित्रि क पूजा या मं गत्य कृ तिले दं॥ ह्यया विरु ग या मू ष्य पू
 जा मू त्या व नान न॥ एता व ग स स स्ता च नि मित्रिक सम हं वा । ग लो ग को विधा ग या र्थि के ४ रु ल को दिति ४॥ अजी को स्त्रि
 सु क या व द्या कृत्वा प ल वि ना च नं । सं गृह्य मूल रू ग र्थं सर्व य वि म मा प य ॥ यत्प्रा ग यं ग हा ति ना ग द्यं तु नृ

10

5

४०

४०

२३

5

10

15

20

25

30